मदरसा और उच्च शिक्षा →

मदरसा का अर्थ → मकतब की शिक्षा समाप्त करने के बाद छात्र मदरसें में प्रवेश करता है। मदरसा शब्द की व्युत्पति अरबी भाषा के 'दरस' शब्द से हुई है जिसका अर्थ है 'भाषण देना'। मदरसा वह स्थान है जहाँ भाषण दिये जाते हैं। मदरसों की शिक्षण-पद्धति व्याख्यानों पर आधारित थी। इन मदरसों में भिन्न-2 विषयों के शिक्षक होते थे।

① **लौकिक शिक्षा** → लौकिक या सांसारिक शिक्षा के अन्तर्गत बालकों को साहित्य, व्याकरण तथा गद्य, गणित, इतिहास, भूगोल, दर्शन शास्त्र, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, यूनानी चिकित्सा, ज्योतिष, कानून और कृषि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

② **धार्मिक शिक्षा** → धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों को कुरान, मुहम्मद साहब की परम्परा, इस्लामी कानून और इस्लामी इतिहास का अध्ययन करना पड़ता था। उन्हें कुरान का अतिगहन और आलोचनात्मक अध्ययन करना पड़ता था और उनकी आयतों को कण्ठस्थ करना पड़ता था।

Scanned with CamScanner

study time
Page No.:
Date : / /

मध्यकालीन शिक्षा के गुण →

① **शिक्षा की अनिवार्यता →** मुस्लिम शिक्षा मुस्लमान बालकों के लिए अनिवार्य थी। उनकी धार्मिक पुस्तक कुरान शरीफ में कहा गया है कि जो व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है उसी को अल्लाह की भक्ति भी होती है। अतः धार्मिक भावनाओं के कारण मुस्लिम शिक्षा को प्रोत्साहन देते थे।

② **निः शुल्क शिक्षा →** मुस्लिम काल में शिक्षा निःशुल्क थी। यहाँ तक की छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के भोजन आदि का प्रबंधन निः शुल्क ही किया जाता था। शिक्षा संस्थाओं का पूर्ण व्यय राज्य या किसी समिति द्वारा वहन किया जाता था।

③ **साहित्य तथा इतिहास का विकास →** मुस्लिम शासकों के दरबारों में विद्वानों का संरक्षण प्राप्त था, जो साहित्य के सृजन में सहायक हुआ। इस काल में दर्शन, नीति आदि विषयों पर मूल साहित्य के साथ-2 अनेक धार्मिक ग्रन्थों, रामायण, महाभारत आदि का फारसी में अनुवाद हुआ।

Scanned with CamScanner

④- गुरु शिष्य का सम्बंध → प्राचीन काल की भाँति मुस्लिम काल में भी गुरु शिष्य के मधुर सम्बंध बने रहे। शिष्य की गुरु में श्रद्धा तथा गुरु का शिष्य पर प्रेम होने के कारण बड़ी आत्मीयता के वातावरण में शिक्षण कार्य होता था। जिससे शिक्षा का सर्वांगीण विकास सरलता से होता था।

⑤ व्यावहारिक शिक्षा पर बल → छात्रों को कोरी आदर्शवादी शिक्षा न देकर जीवन की व्यावहारिक समस्याओं के समाधान में सहायता देने वाली शिक्षा की व्यवस्था थी इसके अतिरिक्त राज्य-कार्य के लिए जिस प्रकार कर्मचारियों, अधिकारियों, निर्णायकों, सैनिकों आदि की आवश्यकता थी; उसका समुचित प्रशिक्षण दिया जाता था। ~~जिससे शिक्षा का विभिन्न~~ व्यवसायों की शिक्षा की भी समुचित व्यवस्था थी।

⑥ शिक्षा को राज्य का संरक्षण → प्रायः सभी मुस्लमान शासकों ने शिक्षा के कार्य में पर्याप्त रुचि ली। प्रान्तीय प्रमुख भी परस्पर होड़ करके शिक्षा-सुविधा का विस्तार करते थे। मकतबों एवं मदरसों के लिए

Scanned with CamScanner

study time
Page No.:
Date : / /

पर्याप्त भूमि देने के साथ-2 राजकीय कोष से उन्हें धन दिया जाता था। शिक्षा की रीति-नीति का निर्धारण शासक करते थे।

⑦ नायकीय पद्धति → मुस्लिम काल में नायकीय पद्धति विद्यमान थी। इसके अनुसार कक्षा में कुछ नायक या तेज छात्र शिक्षक को शिक्षण-कार्य में सहायता प्रदान करते थे।

⑧ उपाधियाँ → मुस्लिम काल में शिक्षा समाप्ति के बाद छात्रों को उपाधि दी जाती थी। धर्म में विशेष दक्षता प्राप्त करने वाले विद्यार्थी को 'आलिम' की उपाधि प्राप्त होती थी। तर्कशास्त्र और दर्शनशास्त्र की शिक्षा समाप्त करने वाले छात्रों को 'फाजिल' की उपाधि प्राप्त होती थी।

Scanned with CamScanner